अर्चयित्वाऽपि गोविन्दं तदीयान्नाऽर्चयेत्पुनः ।
न स भागवतो ज्ञेयः केवलं दाम्भिकः स्मृतः ॥१७७॥
पुमांस्तस्मात्प्रयत्नेन वैष्णवान्पूजयेत्सदा। सर्वं तरति दुःखौघं महाभागवतार्चनात्॥१७८॥
एवमुक्तं मया देवि ! विष्णोराराधनं परम्। नित्यमैमित्तिकं चैव तदीयानां च पूजनम्॥१७९॥
पौरुषं तस्य याथात्म्यं फलसाधनमेव च । तस्याऽऽवसथभेदं च कर्मादिदि चतुष्टयम्॥
तव प्रोक्तं मया देवि ! किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥१८०॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यां संहितायां उत्तरे खण्डे उमामहेश्वरसम्वादे विष्णुपूजाविधानवैष्णवाचारकथनं नाम त्रिपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥२५३॥

दो सौ चौवनवाँ अध्याय

वसिष्ठ उवाच

एवमुक्ता तु सा देवी पतिना शूलपाणिना । प्रणिपत्य महात्मानमुवाच प्राञ्जलिस्तदा॥१॥

पार्वत्युवाच

साधूक्तंहि त्वया नाथ ! वैष्णवं धर्ममुत्तमम् ।
गुह्याद्गुह्यतमंविष्णोः स्वरूपंपरमात्मनः ॥२॥

देवि ! उससे भी श्रेष्ठ भागवतों की आराधना है ॥१७६॥ भगवान गोविन्द की पूजा करके भी जो भगवद् भक्तों की आराधना नहीं करता है, उसको भागवत नहीं दम्भिक समझना चाहिए ॥१७७॥ इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वह सदा वैष्णवों की आराधना करे । महाभागवतों की अर्चना करके वह सम्पूर्ण दुःखों को पार कर जाता है ॥१७८॥ हे देवि ! इस प्रकार से मैंने आपको सर्वश्रेष्ठ भगवान् विष्णु की आराधना को सुनाया । नित्य नैमित्तिक तथा भागवतों की पूजा ॥१७९॥ श्रीभगवान् के यथार्थ स्वरूप, फलों की साधनता उनके गृहों के भेद तथा कर्मादि इन चारों को हे देवि ! मैंने तुम्हें सुनाया । अब दूसरी कौन सी बात सुनना चाहती हो ?॥१८०॥

इस तरह श्रीपद्ममहापुराण के छठे उत्तर खण्ड के उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत भगवान् विष्णु की पूजा का विधान तथा वैष्णवों के अचार का वर्णन नामक दो सौ तिरपनवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२५३॥

महर्षि वामदेव के द्वारा पार्वतीजी को भगवान् विष्णु के दिव्य सहस्र नाम का उपदेश, श्रीराम शब्द की व्याख्या, महादेवजी द्वारा सहस्रनाम तुल्यता का प्रतिपादन और भगवान् रामचन्द्र के अष्टोत्तर शत नामों का वर्णन

वसिष्ठजी ने कहा— अपने पति त्रिशूलपाणि शङ्करजी द्वारा इस तरह से कहे जाने पर लक्ष्मीजी ने शङ्करजी को प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहा ॥१॥ **पार्वतीजी ने कहा**— हे नाथ ! आपने बहुत

धन्याऽस्मि कृतकृत्याऽस्मि सर्वदेवनमस्कृत ! ।
तव प्रसादाद्देवेशमर्चयामि सनातनम् ॥३॥

वसिष्ठ उवाच

ततस्तद्वचनं श्रुत्वा स भवस्त्रिपुरान्तकः । समाश्लिष्याऽवदद्देवीं प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना॥४॥

रुद्र उवाच

साधुसाधु ! महादेवि ! साधु साधु वरानने ! ।
अर्चयस्व हृषीकेशं लक्ष्मीभर्त्तारमच्युतम् ॥५॥
कृतकृत्योऽस्म्यहं भद्रे ! वैष्णव्या भार्यया त्वया ।
गुरुणातवचार्वङ्गि ! वामदेवेन धीमता ॥६॥
अनुज्ञाताऽर्चयस्वेशं पुराणं पुरुषोत्तमम् । गुरूपदेशमार्गेण पूजयित्वैव केशवम् ॥
प्राप्नोति वाञ्छितं सर्वं नाऽन्यथा भूधरात्मजे ! ॥७॥

वसिष्ठ उवाच

एवमुक्ता तदा देवी वामदेवान्तिकं नृप !। जगाम सहसा हृष्टा विष्णुपूजनलालसा ॥८॥
समेत्य तं गुरुं देवी पूजयित्वा प्रणम्य च । विनीताप्राञ्जलिर्भूत्वा उवाच मुनिसत्तमम् ॥९॥

पार्वत्युवाच

भगवंस्त्वत्प्रसादेन सम्यगाराधनं हरेः। करिष्यामि द्विजश्रेष्ठ ! त्वमनुज्ञातुमर्हसि ॥१०॥

वसिष्ठ उवाच

इत्युक्तस्तु तया देव्या वामदेवो महामुनिः। तस्यै मन्त्रवरं श्रेष्ठं ददौ स विधिनागुरुः॥११॥

अच्छी तरह से उत्तम वैष्णव धर्म का वर्णन किया आप भगवान् विष्णु के अत्यन्त गोपनीय स्वरूप को को मुझे बतलायें ॥२॥ हे सर्वदेव नमस्कृत ! मैं धन्य तथा कृतकृत्य हो गयी ! हे देवेश ! मैं आपकी कृपा के कारण सनातन भगवान्विष्णु की अर्चना करती हूँ ॥३॥ **वसिष्ठजी ने कहा**— पार्वतीजी के उस वचन को सुनकर त्रिपुरान्तक शङ्करजी पार्वतीजी का आलिङ्गन करके अपने प्रसन्न मन से कहे ॥४॥ **रुद्र ने कहा**— हे देवि ! हे सुन्दरि ! तुमने बहुत अच्छा कहा । तुम लक्ष्मीजी के पति भगवान् अच्युत की पूजा करो ॥५॥ हे भद्रे ! तुम जैसी वैष्णवी पत्नी को पाकर मैं तो कृतकृत्य हो गया । हे देवि ! तुम्हारे बुद्धिमान गुरु वामदेवजी द्वारा आज्ञा प्राप्त करके तुम पुराण पुरुषोत्तम श्रीभगवान् की अर्चना करो । गुरु के द्वारा उपदिष्ट मार्ग से श्रीभगवान् केशव की पूजा करके हे पार्वति ! कोई भी अपने वाञ्छित मनोरथों को प्राप्त करता है, दूसरे प्रकार से नहीं ॥६-७॥ **वसिष्ठ महर्षि ने कहा**— हे राजन् ! इस तरह से कहने पर देवी पार्वती सहसा प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु की पूजा करने की लालसा से अपने गुरु वामदेव महर्षि के पास गयीं ॥८॥ गुरु के पास आकर पार्वतीजी उनकी पूजा करके तथा उनको प्रणाम करके नम्र होकर हाथ जोड़कर उन मुनिश्रेष्ठ से कही ॥९॥ **पार्वतीजी ने कहा**— हे द्विजश्रेष्ठ ! भगवन् आपकी कृपा से मैं श्रीहरि की अच्छी तरह से आराधना करना चाहती हूँ अतएव आप मुझे आज्ञा प्रदान करें ॥१०॥ **वसिष्ठ महर्षि ने कहा**— उस देवी के द्वारा इस प्रकार से कहे जाने पर महामुनि वामदेवजी ने उनको श्रेष्ठ मन्त्र विधि

नाम्नां सहस्रं विष्णोश्च प्रोक्तवान्मुनिसत्तमः । निवेदयित्वापूजायाविधानमपि देशिकः ॥
उवाच परमप्रीत्या पार्वतीं संशितव्रताम् ॥१२॥

वामदेव उवाच

अर्चयित्वा हृषीकेशं प्रातर्नित्यं वरानने ! । सहस्रनामपठनं कुरुष्व तदनन्तरम् ॥१३॥

वसिष्ठ उवाच

इत्युक्ता तेन गुरुणा प्रहृष्टेनाऽन्तरात्मना । पूजयित्वा नमस्कृत्य पुनरागात्स्वमालयम् ॥१४॥
शिक्षिता गुरुणा तेन वामदेवेन पार्वती । तथा समर्चयामास नित्यं भक्तया सनातनम् ॥१५॥
जपन्ती नामसाहस्रं प्रतिनित्यमतन्द्रिता । उवाच सुसुखेनैव पतिना संशितव्रता ॥१६॥
ततः कतिपयाहस्सु द्वादश्यां वृषभध्वजः । कैलासशिखरे रम्ये विष्णुमाराध्य शङ्करः ॥
उपविष्टततो भोक्तुं पार्वतीं शङ्करोऽब्रवीत् ॥१७॥

शङ्कर उवाच

पार्वत्येहि मया सार्द्धं भोक्तुं भुवनवन्दिते ! ॥१८॥

वसिष्ठ उवाच

तमाह पार्वती देवी जप्त्वानामसहस्रकम्। ततो भोक्ष्याम्यहंदेव भुज्यतां भवता प्रभो !॥
ततस्तां पार्वतीं प्राह प्रहसन्परमेश्वरः ॥१९॥

शङ्कर उवाच

धन्याऽसि कृतकृत्याऽसि विष्णुभक्ताऽसि पार्वति ! ।
दुर्लभा वैष्णवी भक्तिर्भागधेयं विनेश्वरि ! ॥२०॥
रमन्तेयोगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । तेन रामपदेनाऽसौ परं ब्रह्माऽभिधीयते ॥२१॥

पूर्वक प्रदान किया ॥११॥ उन मुनिश्रेष्ठ ने भगवान् विष्णु के सहस्रनामों को बतलाकर विधान भी बतलाकर वे आचार्य प्रसंशित व्रत वाली पार्वतीजी से अत्यन्त प्रेम पूर्वक कहे ॥१२॥ **वामदेव महर्षि ने कहा**— हे वरानने ! प्रतिदिन प्रातः भगवान् विष्णु की पूजा करके उसके बाद सहस्रनाम का पाठ करो ॥१३॥ **महर्षि वसिष्ठ ने कहा**— इस तरह प्रसन्न मन से गुरु के द्वारा कही गयी पार्वतीजी उनको नमस्कार करके तथा उनकी पूजा करके अपने घर आयीं ॥१४॥ अपने गुरु वामदेव महर्षि के द्वारा शिक्षित पार्वतीजी उसी प्रकार से सनातन भगवान् विष्णु की नित्य पूजा करती थीं ॥१५॥ प्रतिदिन नित्य ही भगवान् के सहस्रनाम का पाठ करती हुयी प्रशंसित व्रत वाली वे अपने पति के साथ सुख पूर्वक रहती थीं ॥१६॥ उसके कुछ दिन बाद वृषभध्वज शिवजी मनोहर कैलास पर्वत पर द्वादशी के दिन भगवान् विष्णु की आराधना करके भोजन करने के लिए बैठे और पार्वतीजी से कहे ॥१७॥ **शङ्करजी ने कहा**— हे भुवनवन्दिते ! पार्वति मेरे साथ भोजन करने के लिए तुम आओ ॥१८॥ **वसिष्ठ महर्षि ने कहा**— उनको पार्वतिजी ने कहा हे प्रभो ! हे देव ! आप भोजन करें मैं सहस्रनाम का पाठ करके भोजन करूँगी । उसके बाद जोर से हँसते हुए शङ्करजी ने पार्वतीजी से कहा **शङ्करजी ने कहा**— हे पार्वति ! तुम धन्य और कृत-कृत्य हो भगवान् विष्णु की भक्ता हो हे पार्वति ! सौभाग्य के बिना भगवान् विष्णु की भक्ति होना दुर्लभ है ॥१९-२०॥ ज्ञान

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनामतत्तुल्यं रामनाम वरानने ! ॥२२॥
रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति। मनः प्रसन्नतां याति रामनामाभिशङ्कया ॥
रामेत्युक्त्वा महादेवि ! भुङ्क्ष्व सार्धं मयाऽधुना ॥२३॥

वसिष्ठ उवाच

ततो रामेति नामोक्त्वासहभुक्तवाऽथपार्वती । रामेत्युक्तवामहादेवीशम्भुनासहसंस्थिता ॥
पप्रच्छ शङ्करं देवं प्रीतिप्रवणमानसा ॥२४॥

पार्वत्युवाच

सहस्रनामभिस्तुल्यंरामनामत्वयोदितम् । तस्याऽपराणिनामानि सन्तिचेद्रावणद्विषः ॥
कथ्यतां मम देवेश ! तत्र मे भक्तिरुत्थिता ॥२५॥

श्रीमहादेव उवाच

शृणु नामानि वक्ष्यामि रामचन्द्रस्य पार्वति ! ।
लौकिका वैदिकाः शब्दा ये केचित्सन्ति पार्वति ! ॥२६॥
नामानि रामचन्द्रस्य सहस्रन्तेषुचाधिकम्। तेषुचात्यन्तमुख्यं हि नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥२७॥
विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम् । तादृङ्नामसहस्राणि रामनामसमानि च॥२८॥
यत्फलं सर्ववेदानां मन्त्राणां जपतःप्रिये ! । तत्फलं कोटिगुणितं रामनाम्नैव लभ्यते॥२९॥
नामानि शृणु रामस्यमुख्यानि शुभदर्शने !। ऋषिभिःपरिगीतानितानिवक्ष्यामितेप्रिये ! ॥३०॥
ॐश्रीरामो रामचन्द्रश्च रामभद्रश्च शाश्वतः । राजीवलोचन श्रीमान्राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः ॥३१॥

स्वरूप सत्यानन्द स्वरूप अनन्त में ही योगिजन सदा आनन्दानुभव करते है अतएव ही रामशब्द के द्वारा परंब्रह्म का अभिधान होता है ॥२१॥ हे वरानने ! मनोहर राम, रामेति रामेति, रमे रामे यह कहना सहस्रनाम पाठ के तुल्य है ॥२२॥ हे पार्वति ! जिन नामों के आदि में रकार होता उसको सुनते ही मेरा मन रामनाम की शङ्का से प्रसन्न हो जाता है । हे महादेवि ! राम शब्द का उच्चारण करके तुम भोजन मेरे साथ करो॥२३॥ **वसिष्ठ महर्षि ने कहा**— उसके बाद श्रीभगवान् के राम नाम का उच्चारण करके पार्वतीजी ने शङ्करजी के साथ भोजन कीं । वे राम इस पद का उच्चारण करके शङ्करजी के साथ भोजन करने बैठ गयीं । उन्होंने प्रसन्न मन से शङ्करजी से पूछा ॥२४॥ **पार्वतीजी ने कहा**— आपने कहा है कि राम नाम सहस्रनाम के समान है । रावण से द्वेष करने वाले भगवान् राम के यदि दूसरे नाम हैं तो हे देवेश ! उन्हें आप मुझे बतलाये ॥२५॥ **श्रीमहादेवजी ने कहा**— हे पार्वति ! भगवान् रामचन्द्र के नामों को मैं बतला रहा हूँ उन सबों को तुम सुनो । हे पार्वति ! जितने भी लौकिक और वैदिक शब्द हैं वे सबके सब रामचन्द्रजी के ही नाम हैं; उनमें उनके एक हजार नाम अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । उनमें भी भगवान् के अष्टोत्तरशत नाम अत्यन्त मुख्य हैं ॥२६-२७॥ भगवान् विष्णु के एक-एक नाम सभी वेदों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । उसी तरह भगवान् राम के सहस्रनाम के समान हैं ॥२८॥ हे प्रिये ! सभी वेदों का पाठ करने से जिस फल की प्राप्ति होती है उसके करोड़ गुणा फल राम नाम से होता है ॥२९॥ हे शुभ दर्शने ! भगवान् श्रीराम के मुख्य नामों को तुम सुनो । वे सभी ऋषियों के द्वारा गाये गये हैं मैं उन्हीं सबों को तुम्हें बतला रहा हूँ ॥३०॥ ओम् श्रीराम, रामचन्द्र, रामभद्र, शाश्वत, राजीवलोचना, श्रीमान्, राजेन्द्र, रघुपुङ्गव ॥३१॥

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः । विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरणागतवत्सलः ॥३२॥
वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक्सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतो व्रतफलः सदा हनुमदाश्रयः ॥३३॥
कौशलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः । विभीषणपरित्राता दशग्रीवशिरोहरः ॥३४॥
सप्ततालप्रभेता च हरकोदण्डखण्डनः । जामदग्न्य महादर्पदलनस्ताडकान्तकृत् ॥३५॥
वेदान्तपारो वेदात्मा भवबन्धैकभेषजम् । दूषणत्रिशिरोऽरिश्च त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः ॥३६॥
त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्त्तनः । त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यवासकृत् ॥३७॥
अहल्यापावनश्चैव पितृभक्तो वरप्रदः । जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितलोभो जगद्गुरुः ॥३८॥
ऋक्षवानरसङ्घाती चित्रकूटसमाश्रयः । जयन्तत्राणवरः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥३९॥
सर्वदेवाधिदेवश्च मृतवानरजीवनः । मायामारीचहन्ता च महाभागो महाभुजः ॥४०॥
सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसत्तमः । महायोगी महोदारः सुग्रीवस्थिरराज्यदः ॥४१॥
सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतः सर्वाघनाशनः । आदिपुरुषो महापुरुषः परमः पुरुषस्तथा ॥४२॥
पुण्योदयो महासारः पुराणपुरुषोत्तमः । स्मितवक्त्रो मितभाषी पूर्वभाषी च राघवः ॥४३॥
अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तरः । मायामानुषचारित्रो महादेवाधिपूजितः ॥४४॥
सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः । श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्द्धरः ॥४५॥
सर्वयज्ञाधिपो यज्ञो जरामरणवर्जितः । शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वाधगणवर्जितः ॥४६॥
परमात्मापरब्रह्मसच्चिदानन्दविग्रहः । परं ज्योतिः परं धाम पराकाशः परात्परः ॥४७॥
परेशः पारगः पारः सर्वभूतात्मकः शिवः ।
इति श्रीरामचन्द्रस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥४८॥

जानकीबल्लभ, जैत्र, जितामित्र, जनार्दन, विश्वामित्रप्रिय, दान्त, शरणागत वत्सल ॥३२॥ बालि प्रमथनः, वाग्मी, सत्यवाक्, सत्य विक्रम, सत्यव्रत, व्रतफल, सदा हनुमदाश्रय ॥३३॥ कौसलेय, खरध्वंसी, विराधेवध पण्डित, विभीषण परित्राता, दशग्रीव शिरोहरः ॥३४॥ सप्ततालप्रभेता, हरकोण्ड खण्डन, जामदग्न्य महादर्प दलन, ताडकान्त कृत्, वेदान्तपार, वेदात्मा, भवबन्धक भेषज, दूषणत्रिशिरोऽरिः, त्रिमूर्ति, त्रिगुणात्मक ॥३५-३६॥ त्रिविक्रमः, त्रिलोकात्मा, पुण्यचारित्रकीर्तनः, त्रिलोकरक्षक, धन्वी, दण्डकारण्य वासकृत॥३७॥ अहल्या पावन, पितृभक्तः, वरप्रद, जितेन्द्रिय, जितक्रोध, जितलोभ, जगद्गुरु ॥३८॥ ऋक्षवानर संघाती, चित्रकूट समाश्रय, जयन्तत्राणवरद, सुमित्रापुत्र सेवित ॥३९॥ सर्वदेवाधिदेव, मृतवानरजीवन, मायामरीच हनन, महाभाग, महाभुज ॥४०॥ सर्वदेवस्तुत, सौम्य, ब्रह्मण्य, मुनिसत्तम, महायोगी, महोदार, सुग्रीवस्थिर राज्यदः ॥४१॥ सर्वपुण्याधिकफल, स्मृतः, सर्वाघनाशन, आदि पुरुष, महापुरुष, परमपुरुष ॥४२॥ पुण्योदय, महासार, पुराण पुरुषोत्तम, स्मितवक्त्र, मितभाषी, पूर्वभाषी, राघव ॥४३॥ अनन्तगुण गम्भीर, धीरोदात्त गुणोत्तर, मायामानुष चरित्र, महादेवाधि पूजित ॥४४॥ सेतुकृत, जितवारीश, सर्वतीर्थमय, हरि, श्यामाङ्ग सुन्दर, शूर, पीतवासा, धनुर्धर ॥४५॥ सर्वयज्ञाधिप, यज्ञ, जरामरणवर्जितः, शिवलिङ्ग प्रतिष्ठाता, सर्वाघगण वर्जितः ॥४६॥ परमात्मा, परंब्रह्म, सच्चिदानन्द विग्रह, परंज्योतिः, परंधाम, पराकाश, परात्पर ॥४७॥ परेशः, पारगः, पारः सर्वभूतात्मकः, शिवः ये श्रीरामचन्द्रजी के अष्टोत्तर शत नाम हैं ॥४८॥ अति गोपनीय

गुह्याद्गुह्यतरं देवि ! तव स्नेहात्प्रकीर्त्तितम् ।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि भक्तियुक्तेन चेतसा ॥४९॥
सर्वैः प्रमुच्यतेपापैःकल्पकोटिशतोद्भवैः । जलानि स्थलतांयान्तिशत्रवोयान्तिमित्रताम् ॥५०॥
राजानो दासतां यान्ति वह्नयो यान्ति सौम्यताम् ।
आनुकूल्यं च भूतानि स्थैर्यं यान्ति चलाः श्रियः ॥५१॥
अनुग्रहं ग्रहा यान्ति शान्तिमायान्त्युपद्रवाः । पठतो भक्तिभावेन नरस्य गिरिसम्भवे ! ॥५२॥
यः पठेत्परया भक्तया तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ।
यं यं कामं प्रकुरुतेतन्तमाप्नोति कीर्त्तनात् ॥५३॥
कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च । वैकुण्ठे मोदते नित्यं दशपूर्वैर्दशापरैः ॥५४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्। स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्नतेसंसारिणोजनाः ॥५५॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥५६॥
इमं मन्त्रं महादेवि ! जपन्नेव दिवानिशम् । सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥५७॥
इति ते रामचन्द्रस्य माहात्म्यं वेदसम्मितम् । कथितंवैमयासुभ्रूस्तवप्रीत्या शुभाह्वयम्॥५८॥

वसिष्ठ उवाच

तच्छ्रुत्वा शङ्करेणोक्तं माहात्म्यं परमात्मनः । प्रहर्षमतुलं लेभे आनन्दाश्रुजलाप्लुता ॥
प्रणम्य प्राह देवेशं भर्तारं वृषभध्वजम् ॥५९॥

पार्वत्युवाच

अहो माहात्म्यमतुलं रामस्य परमात्मनः। श्रोत्रतृप्तिर्हि मे न स्यात्कल्पायुतशतैरपि ॥६०॥

हैं इन सबों को तुम्हारे प्रेम के कारण मैंने प्रकाशित किया है । जो भक्ति युक्त अन्तःकरण से इसको पढ़ता अथवा सुनता है ॥४९॥ करोड़ों कल्पों में उत्पन्न पापों से वह मुक्त हो जाता है । जल भी उसके लिए सील बन जाते हैं और शत्रु भी मित्र हो जाते हैं ॥५०॥ राजागण उसके दास हो जाते हैं और अग्नियाँ भी उसके लिए शीतल हो जाती हैं । सभी जीव अनुकूल हो जाते हैं और चञ्चल लक्ष्मी भी स्थिर हो जाती है ॥५१॥ सभी ग्रह अनुग्रह करने वाले हो जाते हैं और सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं । पार्वति भक्ति पूर्वक पढ़ने से मनुष्य के ये सब हो जाते हैं ॥५२॥ जो इसको पराभक्ति से पढ़ता है उसके वश में त्रैलोक्य हो जाता है । वह जो-जो कामना करता है, उन सबों को प्राप्त कर लेता है ॥५३॥ हजारों करोड़ तथा सैकड़ो करोड़ कल्पतक वह वैकुण्ठ में पहले की दश पीढ़ी के तथा दश पीढ़ी बाद के पुरुषों के साथ निवास करता है ॥५४॥ दुर्वादल के समान श्याम वर्ण वाले कमल के समान नेत्र वाले तथा पीताम्बरधारी श्रीराम का इन दिव्य नामों से जो लोग स्तुति करते हैं वे संसारी नहीं हैं ॥५५॥ **रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे । रघुनाथायनाथाय सीतायां पतये नमः ॥५६॥** हे महादेवि ! इस मन्त्र को दिन-रात जपने वाला सभी पापों से मुक्त होकर भगवान् विष्णु के सायुज्य को प्राप्त करता है ॥५७॥ इस तरह से मैंने वेद के समान श्रीरामचन्द्र के माहात्म्य को सुनाया हे सुभ्रु ! तुम्हारे प्रेम के कारण इस शुभ कारक माहात्म्य को मैंने सुनाया ॥५८॥ **वसिष्ठजी ने कहा**— शङ्करजी से उस श्रीभगवान् के माहात्म्य को सुनकर पार्वती आनन्दाश्रु के जल से भींग गयीं और अत्यधिक प्रसन्न हुयीं । उन्होंने देवेश अपने पति को प्रणाम करके कहा ॥५९॥ **पार्वतीजी ने कहा**— धन्य है अतुलनीय श्रीरामचन्द्रजी का माहात्म्य । इसके सुनने से तो दश हजार कल्पों में भी मेरे कानों को तृप्ति नहीं हो सकती है ॥६०॥ हे अनघ ! आपने

धन्याऽहंकृतकृत्याऽस्मिसर्वमुक्तंत्वयाऽनघ ! ।
त्वत्प्रसादाद्धरेर्भक्तिर्जन्मजन्मनिचाऽस्तुमे ॥६१॥

वसिष्ठ उवाच

एवमुक्त्वा स्वभर्तारं गौरी भागवतोत्तमा ॥६२॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥६३॥
जपन्तीमं मन्त्ररत्नं सर्वावस्थासु पार्वती । उवास च सुखेनैव कैलासे शम्भुना सह ॥६४॥
एतत्ते सर्वमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतमं नृप !। साक्षाद्रुद्रेणकथितं शुद्धसत्त्वतरं महत् ॥६५॥
रुद्रप्रोक्तानि शास्त्राणि तामसान्येवपार्थिव !। सम्मोहनार्थंलोकानांप्रोक्तवान्वृषभध्वजः ॥६६॥
रहसि प्रोक्तवान्देव्या इदमेकं हरः प्रभुः । यथार्थमर्थं गुह्यं च सारं मन्त्रस्य भूपते ! ॥६७॥
देव्याः प्रीत्यै महादेवः कथयामास तत्परः। औमामहेश्वरं राजन्सम्वादमिममद्भुतम् ॥६८॥
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि भक्तियुक्तेनचेतसा । स सर्ववन्द्यः सर्वज्ञो महाभागवतो भवेत्॥६९॥
सर्वधर्मविनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमम्पदम् । धन्यः खलुभवाँल्लोके पार्थिवेन्द्र ! महाबल !॥७०॥
त्वदन्वये हरिः श्रीमान्पुराणः पुरुषोत्तमः । उत्पत्स्यते दाशरथिः सर्वलोकहिताय वै ॥७१॥
तस्मादिक्ष्वाकवः पूज्याः सुराणामपि पार्थिव ! ।
येषां जातो हि भगवान्रामो राजीवलोचनः ॥७२॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यां संहितायां उत्तरे खण्डे उमामहेश्वर सम्वादे रामचन्द्राष्टोत्तरशतनामकथनं नाम चतुष्पञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥२५४॥

मुझे सबकुछ सुना दिया । उससे मैं तो धन्य और कृतकृत्य हो गयी आपकी कृपा से मुझमें जन्म जन्मान्तरों तक मुझमें भक्ति होए ॥६१॥ **वसिष्ठजी ने कहा—** इस तरह से गौरी ने अपने पति को कहकर **रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे रघुनाथाय सीतायाः पतये नमः** ॥६२-६३॥ इस मन्त्ररत्न को सभी अवस्थाओं में जपती हुयी पार्वतीजी सुख पूर्वक कैलास पर शङ्करी के साथ निवास कीं ॥६४॥ हे राजन् ! इस तरह मैंने आपको सर्वाधिक गोप्य बातों को सुनाया । इसको साक्षात् रुद्र ने कहा है और वे अत्यन्त शुद्ध हैं॥६५॥ हे राजन् ! रुद्र के द्वारा कहे गये सभी शास्त्र तामस ही हैं शङ्करजी ने संसारियों का सम्मोहन करने के लिए कहा है ॥६६॥ शङ्करजी ने इसे एकान्त में पार्वतीजी को बतलाया है । यह यथार्थ में गोपनीय तथा मन्त्रों का सार है ॥६७॥ देवी की प्रसन्नता के लिए इसे शङ्करजी ने तत्पर होकर कहा । हे राजन् ! यह उमामहेश्वर सम्वाद अद्भुत है ॥६८॥ जो भक्तिपूर्ण अन्तःकरण से पढ़ता और सुनता है वह सर्वज्ञ सर्ववन्द्य महाभागवत हो जाता है ॥६९॥ सभी धर्मों से रहित भी परम्पद को प्राप्त कर लेता है । हे महाबलवान् राजश्रेष्ठ ! आप संसार में धन्य हैं ॥७०॥ तुम्होर वंश में श्रीभगवान् पुराण पुरुषोत्तम श्रीहरि सम्पूर्ण संसार का कल्याण करने के लिए दशरथ के पुत्र रूप में उत्पन्न होंगे ॥७१॥ हे राजन् ! इसी कारण इक्ष्वाकुवंशीय देवताओं के लिए भी वन्दनीय हैं । उन सबों के वंश में राजीवन् लोचन भगवान् राम उत्पन्न हुए ॥७२॥

इस तरह श्रीपद्ममहापुराण के छठे उत्तर खण्ड के उमामहेश्वर संवाद के अन्तर्गत रामचन्द्र अष्टोत्तर शत नाम वर्णन नामक दो सौ चौवनवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२५४॥